वार्तालाप सीडी नं.486, दिनांक 8.1.08, अहमदनगर (महाराष्ट्र)
Disc.CD No.486, dated 8.1.08 at Ahmednagar (Maharashtra)

समयः 6.10-9.35

जिज्ञासुः बाबा मुरली में बोला है आत्माएं चार अवस्थाओं से पसार होती हैं। वो तो हर आत्मा की अवस्था देख करके पता चल जाता है। वैसे ही मुरली में ये भी बात बोली है कि ज्ञान भी चार अवस्थाओं से पसार होता है। अभी ज्ञान तो संगमयुग में चाहे ब्रह्मा के द्वारा सुनाया जाए या प्रजापिता के द्वारा सुनाया जाए, वो तो एक बाप से आता है। तो वो कैसे चार अवस्थाओं से पसार होगा ज्ञान?

Time: 6.10-9.35

Student: Baba, it has been said in the *Murli* that souls pass through four stages. We can know that by observing the stage of every soul. Similarly, it has also been said in the *Murli* that even the knowledge passes through four stages. Now, in the Confluence Age, whether the knowledge is narrated through Brahma or through Prajapita, it comes from one Father. So, how will the knowledge pass through four stages?

बाबाः पहले चीज जो आती है वो थोड़े लोगों को सुनाई जाती है, ज्यादा लोगों को सुनाई जाती है? (सबने कहा – थोड़े लोगों को) इब्राहिम, बुद्ध, क्राइस्ट, गुरु नानक आये – उन्होंने थोड़ों को सुनाया या बहुतों को सुनाया? थोड़ों को सुनाया। उन थोड़ों ने फिर औरों को सुनाया। तो फिर बहुत हुए। फिर उन बहुतों ने और बहुतों को सुनाया। तो बात जो सार रूप में थी वो क्या होती जाती है? फैलती जाती है, विस्तार होता जाता है। माना जो असली सुनाने वाला है, और असली सुनाने वाले से साकार में सुनने वाले हैं वो बहुत थोड़े और फिर सुनने वालों से सुनाने वाले, बढ़ते जाते हैं उनकी संख्या। तो ज्ञान का जो वायब्रेशन है वो बिगड़ता जावेगा या सुधरता जावेगा? बिगड़ता जावेगा। इसलिए बोला। (किसी ने कुछ कहा) एक बात जो पूछ रहा है उसको हल होने दो। हां। हो गई बात?

Baba: The thing that comes in anyone's mind, is it initially narrated to a few people or is it narrated to more people? (Everyone said – to a few people) Abraham, Buddha, Christ, Guru Nanak came; did they narrate (the knowledge of their religion) to a few people or to many? They narrated it to a few people. Those few ones then narrated it to the others. Then they became many. Then those 'many' narrated it to many others. So, the thing that was in an essence form becomes what? It goes on spreading, expanding. It means that the ones who listen in corporeal form from the original narrator are very few and when the number of listeners increases as compared to the ones who narrate, then will the vibrations of knowledge continue to spoil or to improve? It will go on spoiling. That is why it has been said. (Someone said something) Let one thing which is asking be solved. Yes. Have you finished (asking your question)?

जिज्ञासुः लेकिन बाबा वो तो हो गई धर्मपिताओं की बात।

बाबाः धर्म पिताओं की नहीं बाप की भी बात यही है।

जिज्ञासुः लेकिन अभी तो बाप साकार में ज्ञान सुना रहे हैं ना।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबाः सुना रहे हैं लेकिन सब संपर्क में , संसर्ग में एक जैसे आ रहे हैं क्या? कि आठ ही ज्यादा आ रहे हैं । आठ ही ज्यादा आ रहे हैं। लेकिन जो आठ भी हैं उनके ऊपर दुनिया का संग का रंग कुछ न कुछ असर करेगा या नहीं करेगा? करेगा। भले उनके ऊपर उतना थोड़ा असर करता है कि आखरीन में जाकरके माया उनको पकड़ लेती है। और औरों को? औरों को पहले ही पकड़ लेती है। इसलिए बोला कि ज्ञान भी पहले सतोप्रधान होता है फिर सतो सामान्य, रजो और तमो हो जाता है।

Student: But Baba, that is about the religious fathers.
Baba: It is not just about the religious fathers. It is the same case with the Father.
Student: But the Father is narrating the knowledge in the corporeal, isn't He?
Baba: He is indeed narrating (the knowledge), but are all coming in His contact and connection equally? Or are the eight coming in His contact more? Eight are only coming in contact more. But will even the eight the color of the company of the world influence them too to some extent or not? It will. Although it influences them so less that *Maya* catches them in the end (in their last birth). And what about the others? She catches the others much early. That is why, it has been said that even the knowledge is initially *satopradhan* (dominated by the quality of goodness and purity); then it becomes *satosamanya* (when there is ordinary goodness and purity), *rajo* (when there are qualities of activity or passion) and *tamo* (dominated by the quality of darkness or ignorance).

जिज्ञासुः आठ साकार शरीर से बाबा के ज्यादा संग के रंग में आ रहे हैं क्या अभी?
बाबाः (बाबा हंस पड़े) अव्यक्त वाणी में पिछले साल बोला कि तुम बच्चों को नई दुनिया की सौगात बाप ने दी है। उस नई दुनिया में आना-जाना करते हो ना। किससे बोला? सौ से बोला कि हजार से बोला कि सोलह हजार से बोला कि चार करोड़ से बोला? (किसी ने कहा – आठ से बोला) अष्ट देवों से ही बात करते हैं दो-तीन साल से। औरों से तो इतनी बात ही नहीं होती है। और उन्हीं के लिए बोला कि उस नई दुनिया में आना-जाना करते हो ना? तो जो आना-जाना करते होंगे वो ही संग के रंग में ज्यादा होंगे या और भी होंगे?
जिज्ञासुः मन-बुद्धि से या प्रैक्टिकल में?
बाबाः प्रैक्टिकली की बात है।

Student: Are the eight coming more in the color of the company of Baba through the corporeal body now?
Baba: (Baba laughed) It has been said in the *Avyakta Vani* last year that the Father has given you children the gift of the new world. You come and go to that new world, don't you? To whom was it said? Was it said to hundred or to thousand or to sixteen thousand or to four crore (40 million)? (Someone said – It was said to eight) Since last two-three years he (Bapdada) is talking only to the eight deities. He does not talk with the others to that extent. And it has been said only for them: you come and go to that new world, don't you? So, those who come and go (to the new world) only they must be coming in the colour of the company more or will there be more souls?
Student: Through the mind and the intellect or in practical?
Baba: It is a subject in practical.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समयः 19.10-21.20

जिज्ञासुः बाबा अमृतवेला करने के बाद सोना चाहिए या नहीं सोना चाहिए?

बाबाः अमृतवेला करने के बाद, अमृतवेला पौने पांच बजे खलास हो जाता है। अमृतवेला पौने पांच बजे खलास होने के बाद, कोई सो जाता है और सोयेगा तो घंटे-दो घंटे सोएगा कि नहीं? (किसी ने कहा – सात-आठ बजे तक) सात-आठ बजे तक सोयेगा ना। इसका मतलब – उसको संगठन की पावर मिलेगी या नहीं मिलेगी? (किसी ने कहा – नहीं मिलेगी) क्यों? क्यों नहीं मिलेगी? (किसी ने कहा – क्लास) हां, अमृतवेला तो किया, खींच-खांच के। लेकिन परिवार का साथ, परिवार का सहयोग, परिवार का वायब्रेशन नहीं लिया। (किसी ने कहा – बाबा थक जाते हैं ना) हां, तो थोड़ा करो ना। कोई पहलवान कहे कि हम पहलवान बनेंगे और पहले ही दिन दो सौ बैठकें लगा दे, दो सौ दण्डें लगा दे तो सारा शरीर टूट जाएगा ना। धीरे-धीरे प्रैक्टिस बढ़ाओ। पहले पंद्रह मिनट बैठो। फिर आधा घण्टा बैठो। धीरे-धीरे करते-करते फिर घण्टे-दो घण्टे तक ले जाओ।

Time: 19.10-21.10

Student: Baba, should we sleep or not after doing *amritvela*?

Baba: After finishing *amritvela;*(the time of) *amritvela* ends at quarter to five. After *amritvela* ends at quarter to five, if someone sleeps and if he sleeps, will he sleep for one or two hours or not? (Someone said – till seven-eight O'clock) He will sleep till seven-eight O'clock, will he not? It means, will he receive the power of the gathering or not? (Someone said – He will not) Why? Why will he not receive it? (Someone said – class) Yes, you completed *amritvela* by making deliberate efforts. But you did not take the company of the family, co-operation of the family, vibrations of the family. (Someone said – Baba we become tired, don't we) Yes, so do (*amritvela*) a little. If a wrestler says: I will become a wrestler and, on the very first day he does two hundred sit-ups, two hundred push-ups, then the entire body will become weak, won't it ? Increase the practice slowly. Initially sit for fifteen minutes. Then sit for half an hour. Gradually, take it to an hour or two.

जिज्ञासुः कई बच्चों को ड्यूटी रहती है ना बाबा।

बाबाः हां।

जिज्ञासुः नाईट ड्यूटी रहती है।

बाबाः हां, तो? तो क्या हुआ? नाईट ड्यूटी २४ घण्टे रहती है क्या? २४ घण्टे रहती है? फिर क्या बात है? ८ घण्टे ड्यूटी रहती है तो ८ घण्टे आके सो जाओ। ऐसे, सोना तो योगियों के लिए ४ घण्टे के लिए ही बोला है। ४ घण्टे की सालिड नींद हो जाए तो काफी है।

जिज्ञासुः वतन में रहने वालों के लिए रात और दिन होता ही नहीं।

बाबाः ये तीव्र पुरुषार्थियों के लिए है।

Student: Baba, many children have to (be on their) duty.

Baba: Yes.

Student: They have night duties.

Baba: Yes, so? So, what happened? Does the night duty continues for 24 hours? Does it remain for 24 hours? Then what is the matter? If the duty is for 8 hours; come and sleep for 8

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

hours. As such, *Yogis* have been asked to sleep only for 4 hours. If someone enjoys a solid sleep for four hours then, it is enough.
Student: For those who live in the soul world (through their intellect) there is no night and day at all.
Baba: This has been said for the ones who make fast special effort for the soul.

समयः 22.38-24.30

जिज्ञासुः बाबा, बाबा ने कहा है कि अमृतवेला दिन भर अमृतवेला है। तो नहीं हुए तो दिन भर याद किये तो?

बाबाः दिन भर याद किया तो अमृतवेला हुआ ही नहीं?

जिज्ञासुः नहीं। होती है ना दिन भर याद किया तो?

Time: 22.38-24.30
Student: Baba, Baba has said that throughout the day it is *amritvela*. So, what if we do not wake up (at *amritvela*), but remember throughout the day?
Baba: Is it not *amritvela* if we remember throughout the day?
Student: No. It is (*amritvela*) if we remember throughout the day, isn't it?

बाबाः अमृतवेला एक हद का होता है और एक अमृतवेला बेहद का होता है। हद का अमृतवेला जो है सूर्य उदय होने से पहले दो-तीन चार घण्टे का होता है। और जो बेहद का अमृतवेला है जो बेहद के पुरुषार्थी हैं जिनकी बुद्धि में बैठ जाता है पक्का कि अब ज्ञान सूर्य उदय होने वाला है। उनकी नींद ही फिट जाती है। क्या? नींद ही फिट जाती है। उनको याद न आये ये हो ही नहीं सकता। और एक ऐसे पुरुषार्थी भी हैं विलक्षण कि उनके लिए सोते-जागते, उठते-बैठते, हर समय अमृतवेला है। उनको ईश्वर और ईश्वर की सेवा के सिवाय कुछ भी दिखाई ही नहीं देता। उनके लिए कहेंगे सदैव अमृतवेला है।

जिज्ञासुः सृष्टि चक्र में ९६ को बेहद का अमृतवेला बताया है ना।

बाबाः हां, इसका मतलब बेहद का अमृतवेला करने वाले वो ही चार थे जो सीढी के चित्र में ऊपर दिखाए गये हैं।

Baba: One kind of *amritvela* is a limited one and one *amritvela* is an unlimited one. The limited *amritvela* is for two-three-four hours before the sunrise. And as regards the unlimited *amritvela*, the ones who make the unlimited special effort for the soul *(purusharth)*, in whose intellect it fits firmly that now the Sun of knowledge is going to rise, lose their sleep. What? They lose their sleep. It cannot be possible at all that they may not remember (Baba). And there are some such unique ones too who make special effort for the soul, for whom, it is *amritvela* all the time, while sleeping, waking up, while standing and sitting. They do not see anything except God and Godly service. For them it will be said that it is always *amritvela*.
Student: 1996(1976) has been mentioned, as an *amritvela* in an unlimited sense in the (description of the picture of) world drama wheel, hasn't it?
Baba: Yes, means that there were only the four who did the unlimited *amritvela*, who have been shown at the topmost portion of the picture of ladder.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समयः 24.45-26.00

जिज्ञासुः बाबा मुरली में बोला है – ये धोबीघाट आदि से ही चला आ रहा है।

बाबाः हाँ, जी।

जिज्ञासुः तो और वार्तालाप में ये भी बोला है कि बाबा ने आदि में जो भी आज दादियां हैं उनकी भी शरीर रूपी वस्त्र धोये थे। इसलिए वो पियु का नाम लेने से डरते हैं, दादियां।

बाबाः ठीक है।

Time: 24.45-26.00

Student: Baba, it has been said in the *Murli*: this laundry (*dhobighat*) has been going on since the beginning.

Baba: Yes.

Student: And it has also been said in a discussion that Baba had washed the cloth-like bodies of even the *Dadis* who are there today. That is why those *Dadis* fear uttering the name of *'Piu'*.

Baba: It is correct.

जिज्ञासुः तो वो शरीर रूपी वस्त्र धोने की सिस्टिम क्या थी आदि में जिसके कारण वो डरते हैं आज भी?

बाबाः धोबी, धोबीघाट पे जाता है। कपड़े धोता है। धोता है कि नहीं? धोता है। तो बुद्धि रूपी हाथ से कपड़े पकड़ता है कि नहीं? (सबने कहा – पकड़ता है) यहां का धोबी मालूम है ना तुम्हें कौन है? मालूम है ना अच्छी तरह से। मालूम है? बैठ गया। मालूम है? अरे मालूम है कि नहीं? मालूम है। तेरा बुद्धि रूपी हाथ धोबी ने पकड़ा कि नहीं? (किसी ने कहा – पकड़ा है) पकड़ा है। और कपड़े में सटोके लग रहे होंगे।

Student: So, what was the system of washing the cloth-like bodies in the beginning because of which they fear even today?

Baba: A washer-man goes to the laundry. He washes the clothes. Does he wash it or not? He washes. So, does he hold the clothes with the hand-like intellect or not? (Everyone said – He does hold) You know who is the washer man here, don't you? You know it very well, don't you? Do you know? He (the student who asked the question) sat down. Do you know? Arey, do you know, or not? You know. Has the washer man held your hand-like intellect or not? (Someone said – He has held) He has held. And the cloth must be receiving beatings.

जिज्ञासुः नहीं, आदि में क्या सिस्टिम थी?

बाबाः आदि में भी वो ही सिस्टम अंत में भी वोही सिस्टम। सिस्टम क्यों बदलेगी? सिस्टम जो आदि में थी वो अंत में भी थी। कपड़े तो धोना ही धोना है।

Student: No, what was the system in the beginning?

Baba: Whatever was the system in the beginning will be the system in the end as well. Why will the system change? Whatever system was in the beginning was in the end as well. The clothes have to be certainly washed.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समयः 40.35-41.51

जिज्ञासुः बाबा विजयमाला में जो आत्माएं हैं जो रुद्रमाला के समान पुरुषार्थी होंगी। तो रुद्रमाला के आत्माओं को उनकी परख किस आधार पर होगी?

बाबाः विजयमाला वालों को?

जिज्ञासुः ये पर्टिकुलर आत्मा हमारे आप समान पुरुषार्थी है। रुद्रमाला की आत्माएं वो कैसे चैक करेंगे?

बाबाः बुद्धियोग से। राम वाली आत्मा ने कैसे चैक कर लिया?

जिज्ञासुः सभी आत्माएं राम वाली आत्मा जैसी पुरुषार्थी नहीं है ना।

बाबाः क्यों नहीं होंगी? बाप समान पुरुषार्थ नहीं करेंगी? बाप समान परीक्षाएं नहीं होंगी? हैं? डर गये क्या?

Time: 40.35-41.51

Student: Baba, the souls of *Vijaymala* who will be the ones who make special effort for the soul equal to that of (the souls of) *Rudramala*, how will the souls of *Rudramala* be able to judge them?

Baba: (Judge) the souls of *Vijaymala*?

Student: "This particular soul is an equal maker of special effort for the soul as me'; how will the souls of *Rudramala* check this?

Baba: Through the connection of the intellect. How did the soul of Ram check it?

Student: All the souls are not the ones who make special effort for the soul *(purusharthi)* like the soul of Ram, are they?

Baba: Why, will there not be (any)? Will they not make special effort for the soul equal to the father? Will they not face tests like the father? Hum? Are you afraid?

जिज्ञासुः राम वाली आत्मा तो अव्वल नम्बर है।

बाबाः अव्वल नम्बर है। तो उसके बाद जो, एक अव्वल नम्बर अलग हो गया। उसके बाद कोई अव्वल नम्बर होगा कि नहीं? वो तो अव्वल नम्बर निकलते ही रहेंगे। दूसरा निकल गया। फिर जो पहला आयेगा वो अव्वल नम्बर अपने ग्रुप में।

जिज्ञासुः तो उन आत्माओं को ऐसी टचिंग होगी क्या बुध्दि के आधार पर?

बाबाः हां, जी। वो तो मनन-चिंतन-मंथन की बात है।

जिज्ञासुः तो नाम-रूप सहित टच होगा।

बाबाः अरे, जब पहले को टच हो सकता है तो औरों को टच नहीं हो सकता? हैं? हो सकता है।

Student: The soul of Ram is number one soul.

Baba: It is number one. So, after him….; the one who is number one soul is set aside. After him, will there be any number one (soul) or not? Those number one souls will keep on emerging. (Then) the second one emerged. Then the one who will come, will be number one in his group.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: So, will those souls receive such a touching based on the connection of the intellect?
Baba: Yes. That is a subject of thinking and churning.
Student: So, we will receive the touching along with the name and form (of that soul).
Baba: Arey, when the first one can receive the touching, can't the others receive the touching? Hum? They can.

समयः 48.50-51.43

जिज्ञासुः बाबा, भिलाई में वार्तालाप कैसट चली है। तो उसमें क्लेरिफिकेशन चल रहा था तो कैसेट खतम हो गई। तो बात ये चल रही थी कि शरीर भी दो प्रकार के होते हैं। ऐसे ही कंचन काया का प्वाइंट चल रहा था। तो ऐसे ही कंचन काया भी दो प्रकार की होती है। तो यहां तक बात आई फिर स्टाप हो गया। तो वो बात जरा क्लीयर करनी थी कि कंचन काया दो प्रकार की किस तरह से है?

Time: 48.50-51.43
Student: Baba, a discussion cassette has been recorded at *Bhilai*. When the clarification was going on, the cassette ended. So, the topic being discussed was: the bodies are of two kinds as well. Similarly, the point of *kanchan kaya* was being discussed. So, similarly this *kanchan kaya* is of two kinds as well. So, the topic was discussed up to this point and then the recording stopped. So, I wanted to make clear the topic, how is *kanchan kaya* of two types?

बाबाः तो उससे पहले वाली कैसटों में ये बात और क्लीयर की गई है। कंचन काया एक होती है मन-बुद्धि-रूपी आत्मा की। क्या? आत्मा के जो वायब्रेशन हैं जिन वायब्रेशन के आधार पर सूक्ष्म शरीर बनता है। क्या? वो सूक्ष्म शरीर जैसे दो प्रकार, जो है स्थूल शरीर और सूक्ष्म शरीर, दो प्रकार का शरीर होता है ना। ऐसे ही मन-बुद्धि रूपी आत्मा जो है वो पहले कंचन बनती है। उसके वायब्रेशन कंचन बनेंगे। फिर, फिर स्थूल रूप में पांच तत्वों के शरीर भी कंचन बनेंगे। पहले कौन होगा? पहले चैतन्य आत्माएं कंचन बनें। बाद में शरीर कंचन बने।
Baba: But in the earlier cassettes this subject has been clarified further. One kind of *kanchan kaya* is of the mind and intellect like soul. What? The vibrations of the soul; the vibrations on the basis of which the subtle body is formed. What? Just as the subtle body is of two types; there are two kinds of bodies – physical and subtle, aren't there? Similarly, the mind and intellect-like soul becomes *kanchan* (golden) first. Its vibrations will become *kanchan*. Then, in a physical form, the bodies made up of the five elements will become *kanchan* as well. Who will be first? First, the living soul should become *kanchan*. Later on, the body should become *kanchan*.

शरीर जड है। शरीर के ५ तत्व जड़ हैं। तो जड़ थोडेही समझेगा ज्ञान को। चैतन्य ज्ञान को समझता है। तो प्रकृतिपति, वो शिव जब आता है तो प्रकृतिपति को पहले पकड़ता है। क्या? किसको पकड़ता है? जो प्रकृतिपति है उसको पहले पकड़ता है। और प्रकृतिपति के जो भी बच्चे हैं उनको भी पकड़ता है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। फिर जब सब पवित्र आत्माएं बन जाती हैं आत्मिक स्थिति में स्थित हो जाते हैं देह और देह के ५ तत्वों के आकर्षण से परे हो

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जाते हैं। तब उन्हों का वायब्रेशन संगठित हो करके पांच तत्वों को भी पवित्र बनाता है। पांच तत्व अपने आप पवित्र नहीं बनते। उनको ज्ञान नहीं चाहिए। क्या चाहिए? योग चाहिए। स्नेह चाहिए। प्यार चाहिए।

The body is non-living. The five elements of the body are non-living. So, the non-living will not understand the knowledge. The living soul understands the knowledge. So, when Shiv comes, He first of all catches hold of the lord of the nature (*prakritipati*). What? Whom does He catch? He first catches the *prakritipati*. And, He also catches the children of *prakritipati* number wise as per their special effort for the soul. Then, when all the souls become pure, when they become constant in the soul conscious stage, when they become detached from the attraction of the body and the five elements of the body, then their collective vibrations purify the five elements as well. The five elements do not become pure on their own. They do not require knowledge. What do they require? They require *yog*. They require affection. They require love.

जिज्ञासुः आत्मा कंचन बनी – ये कैसे समझ में आयेगा?

बाबाः कंचन वायब्रेशन निकलेंगे। जो उसके नजदीक जाएगा वो ही चेंज हो जायेगा।

Student: How will we understand if the soul has become *kanchan*?

Baba: Golden (pure) vibrations will emerge. Whoever comes close to him (the one whose soul has become kanchan) will change.

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info